तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी) हेतु

"अनुभवात्मक एवं संवादात्मक हिन्दी कक्षा: सक्रिय अधिगम की ओर"

कार्यशाला

काव्य गुंजन

प्रतिभागियों की

स्वरचित कविताओं का संग्रह

शब्दों से सृजन, विचारों से विमर्श,
अनुभवों से अभिव्यक्ति...

10.08.2026 से 13.08.2026
(चार दिवसीय मुखाभिमुख कार्यशाला)

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुंबई
(ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING MUMBAI)

तत त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय संगठन

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुम्बई

संरक्षक

श्री विकास गुप्ता, आई ए एस

आयुक्त,
केंद्रीय विद्यालय संगठन

श्रीमती पी बी उषा

संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)
केंद्रीय विद्यालय संगठन

श्री टी प्रभुदास

निदेशक
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
मुंबई

केंद्रीय विद्यालय संगठन

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुम्बई

कार्यशाला समन्वयक एवं संसाधक मंडल

डॉ राजेश शर्मा

प्रशिक्षण कार्यशाला समन्वयक

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

श्री महेश कुमार कुलदीप

संसाधक

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय जयसिंधर, बाड़मेर
जयपुर संभाग

श्री दिनेश सिंह

संसाधक

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय वि वि नगर, अहमदाबाद

काव्य गुंजन

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी) हेतु आयोजित चार दिवसीय मुखाभिमुख कार्यशाला

"अनुभवात्मक एवं संवादात्मक हिन्दी कक्षा: सक्रिय अधिगम की ओर"

का सामूहिक प्रयास

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संकलन एवं संपादन

श्री महेश कुमार कुलदीप

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

केन्द्रीय विद्यालय जयसिंधर बाड़मेर, सजयपुर संभाग

श्री दिनेश सिंह

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

केन्द्रीय विद्यालय विद्यावल्लभ नगर, अहमदाबाद संभाग

आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुंबई

अनुक्रम

- रचनात्मकता की ओर एक कदम - डॉ टी प्रभुदास, निदेशक……………….08
- अनुभवों की दुनिया - डॉ राजेश शर्मा, समन्वयक………………………..09
- अपनी बात – श्री महेश कुमार कुलदीप, संसाधक……………………….10
  श्री दिनेश सिंह, संसाधक

01 सुमन मीना 11-12

- मैंने जो केवि से सीखा (एक शिक्षक का सफर)
- क्या ज़रूरी नहीं?

02 बलबीर सिंह शेखावत...13

- मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं

03 दलीप सिंह 'दीप'…………………………………………....14-15

- गंगा किनारे घर हो मेरा
- गाँव तो वैसा ही था

04 नीलम यादव...16

- पूरी दुनिया

05 अजमेर सिंह..17-19

- ऊँची मंज़िल का घोंसला
- निराश न होना

06 ख्याति पाठक...20

- काँटा या मोती

07 चेताराम...21-22

- भारत के केंद्रीय विद्यालय

08 पुरषोत्तम पटेल..23-26

➡ कक्षा के बाहर

09 राकेश कुमार..27

➡ चलते रहना

10 अश्वनी कुमार..28

➡ मेरी अभिलाषा

11 लोकेश कुमार..29

➡ जीवन के दो फ़रिश्ते

12 कुलदीप कविया..30-31

➡ आशाओं के दिए

13 विनीता पाण्डेय..32-33

➡ बेटी और वसंत

➡ डरता है मन

14 प्रतीक त्रिपाठी..34-38

➡ प्रेम

➡ पृथ्वी और तुम

➡ खबरें

➡ इसमें मेरा कोई दोष नहीं

➡ दुनिया केवल भाषा और शब्दों के जाल से नहीं चलने वाली

15 पुरणलाल..39-40

➡ पिता

16 गंगा विशन..41-42

➯ माँ-ईश्वर का सबसे सुंदर स्वरूप

➯ जीट प्रशिक्षण और मुंबई की बारिश

17 चेतन लाल आदित्य..43-44

➯ हिन्दी की बिंदी

18 रंजीत कुमार जयसवाल...45

➯ शिक्षा ही वह महान साधन है

19 लीला शर्मा...46-47

➯ बारिश

➯ मेरी माँ-मेरी प्रेरणा

20 सरला उइके...48

➯ सोच की ताकत

21 सुमित्रा कुम्हार..49

➯ बचपन की चाह

22 साक्षी शिंगटे..50-51

➯ राजभाषा हिन्दी की कहानी-मेरी जुबानी

23 लवकुश शर्मा...52

➯ के वि का मन

24 राजेश शर्मा..53-54

➯ कल्पना से सृजन तक

25 दिनेश सिंह..55-57

➯ काश! मैं किसाण होता

26 महेश कुमार कुलदीप...58-59

➯ अगरचे हो गई है हार मेरी

➯ सौलह आना सच्चाई थी बाबू जी की बातों में

रचनात्मकता की ओर एक कदम

डॉ टी प्रभुदास, निदेशक

शब्द मनुष्य की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति हैं। वे केवल भावों के वाहक नहीं, अपितु अनुभवों, संवेदनाओं और चिंतन के जीवंत दस्तावेज भी हैं। जब शिक्षण के क्षेत्र से जुड़े शिक्षक अपनी अनुभूतियों को शब्दों का आकार देते हैं, तब कविता केवल साहित्य नहीं रह जाती, वह जीवन और शिक्षण के मध्य एक सेतु का कार्य करने लगती है।

"प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी) हेतु 'अनुभवात्मक एवं संवादात्मक हिन्दी कक्षा: सक्रिय अधिगम की ओर" विषयक इस चार दिवसीय कार्यशाला का मूल उद्देश्य शिक्षकों को ऐसे शिक्षण-आयामों से जोड़ना रहा है, जो कक्षा को अधिक जीवंत, सहभागी और संवेदनशील बना सकें। इस कार्यशाला के दौरान यह अनुभव अत्यंत सुखद रहा कि प्रतिभागियों ने न केवल एक शिक्षक के रूप में, बल्कि एक सृजनशील रचनाकार के रूप में भी स्वयं को अभिव्यक्त किया।

"काव्य गुंजन" इसी सृजनात्मक यात्रा का साकार स्वरूप है। यह काव्य-संग्रह प्रतिभागियों के अनुभवों, संवेदनाओं, विचारों और जीवन-दृष्टि का सामूहिक प्रतिबिंब है। इन कविताओं में कहीं शिक्षक का आत्ममंथन है, कहीं समाज के प्रति उसकी प्रतिबद्धता, कहीं प्रेम और प्रकृति की मधुरता है, तो कहीं मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था।

मुझे विश्वास है कि यह काव्य-संग्रह पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि उन्हें यह भी अनुभव कराएगा कि एक शिक्षक, अपने शिक्षण के साथ-साथ, समाज की चेतना और संस्कृति का संवाहक भी होता है।

मैं इस संग्रह में अपनी रचनाएँ सम्मिलित करने वाले सभी प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

अनुभवों की दुनिया

मनुष्य का जीवन केवल वर्षों का विस्तार नहीं, बल्कि अनुभवों का अनंत संग्रह है। प्रत्येक क्षण, प्रत्येक संवाद, प्रत्येक सुख-दुःख और प्रत्येक संघर्ष हमारे भीतर एक नई अनुभूति को जन्म देता है। यही अनुभूतियाँ जब शब्दों का रूप लेती हैं, तो कविता बन जाती हैं। 'काव्य गुंजन' इसी अनुभूतिमय संसार की मधुर प्रतिध्वनि है-एक ऐसा काव्य-संग्रह, जिसमें संवेदनाओं की विविध धाराएँ एक साथ प्रवाहित होती हैं।

इस संग्रह का शीर्षक **'काव्य गुंजन'** अत्यंत सार्थक है। गुंजन केवल ध्वनि नहीं, बल्कि भीतर से उठती वह अनुगूँज है जो लंबे समय तक मन में बनी रहती है। इस संग्रह में संकलित रचनाएँ भी ऐसी ही अनुगूँज हैं-कहीं स्मृतियों की, कहीं सपनों की, कहीं प्रश्नों की और कहीं परिवर्तन की आकांक्षा की। यहाँ कविताएँ केवल पढ़ी नहीं जातीं, बल्कि महसूस की जाती हैं।

विशेष रूप से यह काव्य-संग्रह उस रचनात्मक वातावरण की देन है, जहाँ अनुभवात्मक और संवादात्मक अधिगम को केंद्र में रखा गया। जब शिक्षक स्वयं संवेदनशील होकर जीवन को देखते हैं, संवाद करते हैं, सुनते हैं और महसूस करते हैं, तब उनकी रचनाएँ केवल साहित्य नहीं रहतीं, बल्कि मानवीय चेतना का दस्तावेज बन जाती हैं। इस संग्रह में सहभागी रचनाकारों ने अपने निजी अनुभवों को व्यापक मानवीय संदर्भों से जोड़ा है, जिससे ये कविताएँ व्यक्तिगत होते हुए भी सामूहिक बन उठती हैं।

मैं इस संग्रह के सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ कि उन्होंने अपने अनुभवों को शब्दों का आकार देकर उन्हें साझा करने का साहस किया। यह साहस ही सृजन का प्रथम कदम है। आशा है कि **'काव्य गुंजन'** पाठकों के मन में संवेदना, चिंतन और रचनात्मकता की नई तरंगें उत्पन्न करेगा।

सादर

डॉ राजेश शर्मा, समन्वयक

अपनी बात

प्रशिक्षण केवल ज्ञान और कौशल के अर्जन का माध्यम नहीं है; यह अनुभवों को साझा करने, नई दृष्टि विकसित करने और स्वयं की अंतर्निहित सृजनात्मकता को पहचानने का अवसर भी है। **'अनुभवात्मक एवं संवादात्मक हिंदी कक्षा: सक्रिय अधिगम की ओर'** विषयक कार्यशाला के दौरान प्रतिभागी शिक्षकों ने अपने भीतर के रचनाकार को शब्द दिए। उनकी रचनाओं में कहीं प्रकृति की कोमलता है, कहीं जीवन के संघर्षों की आहट; कहीं मानवीय संवेदनाओं की गहराई है, तो कहीं सामाजिक सरोकारों की मुखर अभिव्यक्ति।

'काव्य गुंजन' में संकलित प्रत्येक रचना अपने आप में एक भाव-जगत है। ये कविताएँ इस विश्वास को पुष्ट करती हैं कि एक संवेदनशील शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक नहीं, बल्कि समाज की संवेदनाओं और मूल्यों का सृजनकर्ता भी होता है। शिक्षक जब स्वयं सृजन करता है, तब वह अपने विद्यार्थियों में भी कल्पना, अभिव्यक्ति और सृजनशीलता के बीज अधिक प्रभावी ढंग से रोप सकता है।

इस संकलन को आकार देना हमारे लिए एक सुखद और रचनात्मक अनुभव रहा। जीट मुंबई एवं कार्यशाला निदेशक श्री टी प्रभुदास जी का विशेष धन्यवाद है कि इस पुनीत कार्य हेतु हमें चुना। सभी प्रतिभागी शिक्षकों का भी हृदय से अभिनंदन, जिन्होंने अपने भावों को शब्दों का रूप देकर इस संग्रह को समृद्ध किया।

आइए, शब्दों की इस यात्रा में भावों को सुनें, संवेदनाओं को महसूस करें और सृजन की इस गुंजन को आगे बढ़ाएँ।

सादर

संपादक एवं संसाधक द्वय

महेश कुमार कुलदीप एवं दिनेश सिंह

सुमन मीना

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पोरबंदर

अहमदाबाद संभाग

1

मैंने जो केवि से सीखा - हर बच्चे में छिपी कोई खास प्रतिभा यहाँ।
शिक्षा देना मेरा कर्म, पर हर दिन एक नई सीख यहाँ मुझे।
सेवा, समर्पण और कर्म - यही सच्ची पहचान यहाँ।
कितने काम, कितने काज़, हर दिन एक नया अभियान यहाँ।
पर मैंने सीखा - चिंता नहीं, केवल चिंतन करना है।
मन में सच्चा विश्वास जगाना,
और हर कार्य सफल बनाना है।
सकारात्मक सोच की ज्योति जलानी है,
क्योंकि रही जैसी सोच , वैसी ही असीम ऊर्जा बहेगी यहाँ।
हर शिक्षक की ज्ञान-ज्योति हर बच्चे के जीवन में उजियारा भरती।
हर बच्चा सबसे न्यारा यहाँ।
उसकी प्रतिभा, उसकी मुस्कान सबसे प्यारी यहाँ।
यही है भारत का उज्ज्वल भविष्य,
यही हर एक चमकता सितारा है।
"तत्त्वं पूषन् अपावृणु" का संदेश यहाँ।
अज्ञान के हर आवरण को ज्ञान की ज्योति से हटाना है।
बस इतना ही जाना है - रुकना नहीं, बढ़ते जाना।
हर मुश्किल आसान यहाँ है,
हार्डवर्क तो दुनिया जाने, केवि हमें स्मार्ट बनाए, कर्मपथ पर आगे बढ़ाए।
यही मेरे केवि ने मुझे सिखाया।
मुझे राष्ट्र-निर्माण का एक अंग बनाया।

2

ज़रूरी नहीं हर बार आगे निकलना

क्या ज़रूरी नहीं? किसी को साथ लेकर आगे बढ़ना!

ज़रूरी नहीं अपनी ही जीत पर इतराना,

क्या ज़रूरी नहीं? किसी की जीत पर मुस्कुराना!

ज़रूरी नहीं किसी की कमी बताना,

क्या ज़रूरी नहीं? उसकी अच्छाई को पहचानना!

ज़रूरी नहीं मुश्किल में किसी को अकेले छोड़ देना ,

क्या ज़रूरी नहीं? किसी का हौसला बन जाना!

ज़रूरी नहीं केवल अच्छे अंक पाना,

क्या ज़रूरी नहीं? अच्छा इंसान भी बन जाना!

ज़रूरी नहीं सबसे आगे दिखाई देना,

क्या ज़रूरी नहीं? पीछे रह गए साथी को भी आगे लाना!

मेरे प्यारे विद्यार्थियों,

जो ज्ञान हमे किताबों से मिला हैं।

क्या जरूरी नहीं? उसे जीवन में उतारना!

बलबीर सिंह शेखावत

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय भरतपुर

जयपुर संभाग

1

मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन
आगे सारा आसमान बाकी है।
मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं...........।
गाँव का गौरव और देश का अभिमान बनूँ।
माँ की आँख का तारा, सबका दुलारा बनूँ
दोस्तों का प्यारा, बुजुर्गों का सहारा बनूँ॥
मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं...........।
गुरु के लिए एकलव्य बनूँ।
भाई के लिए भरत बनूँ।
श्रवण सा मैं सुत बनूँ॥
मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं...........।
अनुजों का सारथी बनूँ।
अग्रजों का प्रार्थी बनूँ।
कभी नहीं मैं स्वार्थी बनूँ॥
मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं.............।
अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीन
आगे सारा आसमान बाकी है।
मैं युवा हूँ मेरे भी कुछ अरमान हैं.............॥

दलीप सिंह

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 01, वायु सेना स्थल सूरतगढ़ राजस्थान

जयपुर संभाग

1

गंगा किनारे घर हो मेरा,

जहाँ सुकून हर पहर हो मेरा।
दरिया की रवानी में खो जाऊँ,
हर लहर में एक असर हो मेरा।

चाँदनी रातों में जब हवा चले,
ख़्वाबों सा कोई सफ़र हो मेरा।
गंगा की माटी से खेलूँ मैं,
उस मिट्टी में ही मुक़द्दर हो मेरा।

आँगन में तुलसी, दीया जले,
और दिल में रौशन बसर हो मेरा।
कश्ती चले अरमानों की,
हर साहिल पे मुक़ाम हो मेरा।

नज़्में कहूँ मैं बहते पानी से,
हर लफ़्ज़ में इक हुनर हो मेरा।
गंगा किनारे घर हो मेरा,
जहाँ खुदा भी मेहरबान हो मेरा।

2

गाँव तो वैसा ही था-
पगडंडियाँ, वही कुआँ, वही पीपल,
छाँव अब भी मीठी थी,
पर वो दोस्त ना मिले...

गली में दौड़ते कंचों की झंकार,
नीम की डाली से झूलती खुशियाँ,
हर मोड़ पर एक किस्सा पिघलता मिला,
पर वो हँसी... वो ठहाके...
वो दोस्त ना मिले।

नहर किनारे पत्थर से नावें बनती थीं,
बरसात में मिट्टी के महल सजते थे,
अब नहर सूनी है, और महल भी ध्वस्त,
पर यादें अब भी गीली थीं,
फिर भी... वो दोस्त ना मिले।

एक छत थी जहाँ सारे जमा होते थे,
चोरी से अमरूद तोड़ते,
डाँट खाने के बाद भी मुस्कराते-
छत अब भी थी,
पर आँखें तलाशती रहीं...
और वो दोस्त ना मिले।

शायद बड़े हो गए हैं सब,
या वक्त की भीड़ में गुम,
मैं भी लौटा हूँ, पर अधूरा सा,
क्योंकि गाँव तो मिला...
पर वो दोस्त ना मिले।

नीलम यादव

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, राजकोट

अहमदाबाद संभाग

1

निकलती थी जब वो घर से,
अनगिनत चेहरे ताँकते हुए फुसफुसाते-
'अकेली है ,कैसे करेगी सब ?'

वह देखती लोगों के चेहरे,
फिर मन ही मन मुस्कुराती-
उसकी एक मुस्कान में
दो जिंदगियो का हौंसला था।

उसके हाथों में चूड़ियों
से ज्यादा ज़िम्मेदारियाँ थीं।

दुनिया की नज़र में वो
अकेली थी, लेकिन
वह अपने बच्चों की
पहली उम्मीद,पहली ताकत
और पूरी दुनिया थी।।

अजमेर सिंह

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल ठाणे

मुंबई संभाग

1

जब पहुँचा मुंबई नगर
देखी ऊँची-ऊँची इमारतें
आसमान को छूने वाली।
सच होती देखी बातें,
मन-मस्तिष्क में आया विचार
रैन बसेरा हो इनमें,
सपने को साकार करने
एड़ी चोटी की एक हमने।

ऊँची मंज़िल पाने की ख़ातिर
लगा पेट को भींचे,
पाई-पाई जोड़कर रकम
एकत्र की जैसे-तैसे।
वर्षों लग गए पाने में
जब से मुकाम को सींचे,
आख़िर वह पल आया
बत्तीसवीं मंजिल पाई ऐसे।

बत्तीसवीं मंज़िल से आज
वाह! देख रहा था नीचे,
बच्चे खेल रहे या बूढ़े

पता चले अब कैसे।
ऊपर चढ़ते जाओ जितना
चैन बेतहाशा खींचे,
धरातल के खेलों को फिर
जान सकोगे कैसे।

पेड़ की कनखी पर घोंसला-सा
कोई आगे न पीछे,
दरवाज़े पर नहीं झाँकता कोई
चाहे खनकाओ पैसे।
एक और नया सफ़र जुड़ गया
अब ऊपर से नीचे,
भू पर रह रही दुनिया से
संबंध जोड़ सकोगे कैसे।

कुछ सपने होते ऐसे
पूरे होने पर भी रहोगे वैसे,
जिंदगी तबाह करने से अच्छा
रहें सरल मन से।
ऐसी ऊँचाई किस काम की
सब लुट जाए जिस से,
स्वयं के न हो सको
जब अशक्त हो जाए तन से।

2

प्रतियोगिता हुई,
असफलता ने दामन न छोड़ा,
चेहरा रूआँसा हुआ,

अँधेरा जैसे छाया हुआ,
घुटनों में मुख छुपाया हुआ,
उदासी-कुहासा फैला हुआ,
नम आंखों से,
नज़र नहीं कुछ आ रहा,
भूख-प्यास से दूर हुआ,
मेहनत पर पानी फिरा,
फिर क्या हुआ?
भीड़ की ओर देख,
उस भीड़ से जो निकल कर आया,
बताओ सफल या असफल हुआ?
निःसंदेह सफल होकर आया।
असफल वह हुआ जो
प्रतियोगिता तक न पहुँच सका।
इसलिए चेहरा उठा,
स्वासों में जोश जगा,
उड़ान भरने की तैयारी कर,
अगला नंबर तुम्हारा हुआ।

ख्याति पाठक

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 4 कोरबा
रायपुर संभाग

1

जीवन की इन राहों में
हैं कितने काँटे कितने मोती
मैं काँटों से चुनकर मोती
एक काँटा- एक मोती
एक काँटा -एक मोती
चुन कर एक-एक दाना
बना रही मोती का हार
दिखने में सुंदर से मोती
पहनूँ तो केवल काँटों का हार

चेताराम

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय झुंझुनू

जयपुर संभाग

1

भारत के केंद्रीय विद्यालय,
हम सब के गौरव का आलय।।
गुरुजनों की रम्य स्थली,
अटल विश्वास की दिव्य पुतली।
उच्च कर्मशील की है यह क्रिया,
मेधावी छात्रों को लगती प्रिय।
भारत के केंद्रीय विद्यालय,
हम सब के गौरव का आलय ।।

इसके विश्वास हैं बड़े महान,
आत्म चेतना की यह पहचान।
नियम उप नियमों में ये अटूट,
बोले कोई ना इसमें झूठ।
भारत के केंद्रीय विद्यालय,
हम सबके गौरव का आलय।।

दृढ़ संघर्षों के प्रबल प्रतीक है,
उच्च आदर्शों की बन गई लीक।
स्वर जागृति के करती शरीक,
प्रातः किरणों से देते सीख।

भारत के केंद्रीय विद्यालय,
हम सब के गौरव का आलय।।

दृढ़ हिमालय से भवन वाला,
घुसने न दे अज्ञान का पाला।
यहाँ विद्वान सिखाते प्रेरणा पाले,
वीणा धारिणी सरस्वती के बाले।
भारत के केंद्रीय विद्यालय,
हम सबके गौरव के आलय।।

पुरषोत्तम पटेल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 रायपुर
रायपुर संभाग

1

हमने कहा-
सच बोलना अच्छी बात है,
बच्चों ने सिर हिलाया,
और हम आगे बढ़ गए।

उसी दिन
सच कहने की बारी आई,
हम कुछ देर चुप रहे,
फिर बात को
दूसरे कमरे में रख आए।

हमने कहा-
अपने हिस्से की जिम्मेदारी
खुद उठानी चाहिए,
और शाम तक
हम अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ
एक-दूसरे की मेज़ पर रखते रहे।

हमने उन्हें सिखाया-
अन्याय के सामने
आवाज़ उठाना,

और अपनी आवाज़ को
धीरे-धीरे
इतना समझदार बना लिया
कि वह सुनाई ही न दे।

हमने कहा-
हर काम ईमानदारी से होना चाहिए,
फिर कुछ कामों को
नियमों के बीच से
रास्ता निकालना सिखाया।

कोई बहुत बुरा नहीं था,
कोई बहुत अच्छा भी नहीं-
बस सबके पास
अपनी-अपनी वजहें थीं,
अपनी-अपनी मजबूरियाँ,
और बचा लेने को
अपनी-अपनी खाल।

हमने आदेश माने,
व्यवस्था चलती रही,
काग़ज़ों पर सब कुछ
ठीक-ठाक दिखाई देता रहा।
बस कहीं भीतर
एक छोटी-सी आवाज़
हर बार पूछती रही-
क्या सचमुच सब ठीक था?
हमने उसे भी
बहुत समझदारी से

चुप रहना सिखा दिया।

फिर एक दिन
हम कक्षा में पहुँचे।
बच्चों को बताया-
सत्य क्या है,
साहस क्या है,
ईमानदारी किसे कहते हैं,
और सही के साथ खड़े होना
क्यों ज़रूरी है।

बच्चे सुनते रहे।
कोई सवाल नहीं किया।
शायद उन्हें
सवाल पूछना अभी नहीं आया था,
या शायद
वे सवाल से आगे
कुछ और देख रहे थे।

वे हमारी किताबें नहीं,
हमारे चेहरे पढ़ रहे थे।
हमारी आवाज़ नहीं,
हमारे बीच की चुप्पियाँ पढ़ रहे थे।
हमारे शब्द नहीं,
शब्दों के बाद
हमारा आचरण पढ़ रहे थे।

तभी लगा-
कक्षा में पढ़ाई जाने वाली चीज़ें

शायद बहुत कम हैं।
कक्षा के बाहर
हम जो छोड़ आते हैं,
वही तो
बच्चों की पहली किताब है।
और उस किताब में
हमने क्या लिखा है-
यह प्रश्न
बच्चों ने नहीं पूछा।
वे बस
उसे पढ़ते रहे।
कक्षा के बाहर।

राकेश कुमार

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

केंद्रीय विद्यालय डब्ल्यू सी एल न्यू माजरी

मुंबई संभाग

1

राहें नई बुलाती हैं,
कदमों को बढ़ जाना है।
जो दिखता है आँखों से,
उससे आगे जाना है।

कभी धूप मिलेगी राहों में,
कभी छाँव का बसेरा होगा।
कभी अकेलापन साथ चलेगा,
कभी कोई अपना चेहरा होगा।

हर मोड़ कोई बात कहेगा,
हर पल कुछ सिखलाएगा।
जो मन खुलकर देख सकेगा,
वही स्वयं को पाएगा।

मंज़िल से बढ़कर राहों में,
जीवन का अर्थ छिपा है।
चलते-चलते जो बदल सके,
उसने ही जीवन जिया है।

अश्वनी कुमार

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 वास्को-द-गामा, गोवा
मुंबई संभाग

1

केन्द्रीय विद्यालय_
पूर्ण प्रज्ञा का भानु उदित हो,
रहे न अज्ञानता का अन्धविश्वास।
केन्द्रीय विद्यालय की किरने चमके ,
विद्या बुद्धि का फैले प्रकाश॥

पंचशील_
झूठ, नशा, चोरी और हिंसा ,
व्यभिचार से सदा विरत रहना।
पंचशील आदर्श अनूठा,
मानवता का सच्चा गहना ॥

सम्यक वचन_
निज हित में हो या परहित में,
हो अहित न कभी किसी का।
करो बाद में सोचो पहले,
सम्यक वचन है नैतिकता का॥

आचरण_
अपने या अपनों के प्रति,
व्यवहार चाहते हो जैसा।
मानवता नैतिकता अपनाना तुम ,
सदाचार अपनाओ अपनों जैसा॥

लोकेश कुमार

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 वायुसेना स्थल जामनगर
अहमदाबाद संभाग

1

मैं नहीं देता दर्जा उनको भगवान का-
जहाँ कुछ माँगने से पहले,
पूजन करना पड़े इंसान का।

मैं मानता हूँ उनको अपनी ज़िंदगी का फरिश्ता,
क्योंकि एक वही हैं,
जो बिना शर्त के निभाते हैं अपना रिश्ता।

कहते हैं कि भगवान तो पूजन के बाद ही
सुनते हैं हमारी अरदास,
पर वो तो बिन सुने बिन पूछे बिन पूजन के ही
पूरी करते हैं हमारी हर आस,
और कभी नहीं होने देते हमको उदास।

एक माँ ही तो है
जो करती है हमसे अंधा प्यार
और एक पिता हैं
जो हमारी खुशी के लिए खुद से भी नहीं रखते कोई सरोकार।

जीवन के ऐसे दो फरिश्तों को
करता हूँ मैं वंदन बारम्बार।
(माता-पिता को समर्पित)

कुलदीप कविया

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय अंबरनाथ

मुंबई संभाग

1

बरसा ऋतु के शुरूआत में,
बहुत बारिश हुई।
आशाओं के दिए जलाए

"माँ: ने, इस बार दिवाली पर, खूब कपड़े दिलाऊँगी बच्चों को।।
अचानक पति फिसल गए
टाँग टूट गई ! चला इलाज।

डॉक्टर ने सलाह दी,
थोड़े समय पश्चात चलने- फिरने लगेंगे आशाओं के दिए फिर जलाए "माँ" ने।
फसल पकने को आई,
घनघोर बारिश आई,
बर्बाद हो गई फसल।।
बच्ची ने माँ से कहा -"माँ ! दिवाली आ रही है, कपड़े दिलाओ।"

"माँ" बोली-
तेरे बापू की टाँग टूट गई,
फसल बर्बाद हो गई,
और भी खर्चे होंगे,
अगले साल फिर बारिश होगी

अगली दिवाली पर तुम्हें खूब अच्छे कपड़े दिलाऊँगी।।
इस बार बेटी ने "आशाओं के दिए जलाए"।।

देश का हर किसान,
किसान के परिवार का हर सदस्य,
बस यों ही जलाता रहता है।।
"आशाओं के दिए" हर क्षण,
हर दिन, हर साल।।

विनीता पाण्डेय

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

केन्द्रीय विद्यालय झगराखण्ड

रायपुर संभाग

1

मन ले रहा हिलोरें सच हुआ पीपल पात सरिस मन डोले

शिफूगों से लदी डाली पलासी

सेमल पलास गुलमोहर शीरीष

ऐसे लहमे में बदला सारा कोलाहल तुमुलनाद में

मन गा उठा

न जाने क्या हुआ जो तूने छू लिया

खिला गुलाब सा मेरा तन बदन

आम्रों की सुरभित मंज़रियाँ

रंग बिरंगे पुष्पों पर मंडराती तितलियाँ

मधुर मादक स्वर में कलरव करते विहंग

आह्लाद से भर देते अंग-अंग

हर क्षण रोमांचक लगता

मानो सब कुछ यहीं है बसता

इस सुरभित कुसुमित आनंदित अज़िर में

दंतुरित मुस्कान फेर संपूर्ण भवन में

वात्सल्य की मधुर रागिनी सी

मेरी बेटी की अस्पष्ट भाषा तुतली

सुनकर समझकर मैंने जाना
सच हो गया आज मेरे जीवन में वसंत का आना ॥

2

अब मौन हो जाएगी चिड़िया
टी वी टुट-टुट की बोली गुम हो जाएगी पंत की कविता से/
जल में डूबी थीं जो अतल नदियाँ/
अब सूखकर खामोश हो जाएंगी/
गलत हो जाएंगी गंगा-यमुना की कहानियाँ/
बारिश में भीगी वानस्पतिक दृश्यमाला/
स्वप्न सरीखी बात लगेगी/
हो जाएगी वह दूभर दिखना/
आज हमने गढ़ लिया है जादुई संसार/
समृद्धि के अनंतिम शिखर पर/
खड़े हैं लाल-पीले, हरे-नीले कांक्रीट के जंगल_
अब कदम की डाल पर नहीं झूलेंगे
रासबिहारी नंदलाला/ बरसाने वाली राधिका के साथ_
अब मीरा को मानसिक रोगी कर देंगे करार/
उत्तर आधुनिक समाज के यंत्रवत लोग/
उपभोक्तावादी मौका परस्त दौर में/प्रेम अब कमर्शियल बन गया है।

प्रतीक त्रिपाठी

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय गढहरा बेगूसराय बिहार

पटना संभाग

1

प्रेम हमारे भीतर ऐसे रहता है

जैसे रहती है मिट्टी में नमी

नमी के बिना मिट्टी धूल हो जाती है।

मेरे प्रेम तुम रहोगे

तो बची रहेगी मुझमें नमी

और

मैं धूल बनने से बच जाऊँगा।

2

मुझे पृथ्वी से

बहुत प्रेम है

मैंने कभी नहीं चाहा

कि पूरी की पूरी पृथ्वी

मेरी हो जाए

मैं तुमसे उतना ही प्रेम करता हूँ

जितना कि पृथ्वी से

मैं तुमसे और पृथ्वी से

बस जीने भर की

जगह चाहता हूँ।

3

रोज सुबह

तमाम खबरें

मेरे भीतर किसी पिघले हुए शीशे की तरह उतरती हैं

और मैं छटपटाने लग जाता हूँ।

अपनी पत्नी को कुछ देर तलक देखता हूँ

बच्ची को गोद में न जाने क्यों और कस लेता हूँ

खबरों के आने के द्वार अनन्त हो गए हैं

वे जब भी आती हैं

दो एक नहीं

एक सैलाब आता है

खबरों का

और मैं लहूलुहान हो जाता हूँ हर सुबह।

रोज गुस्से से भरता हूँ

छटपटाता हूँ

और अपनी हद में ही कूद फाँदकर शांत हो जाता हूँ

किसी रोज एक कविता लिखता हूँ

और

उसे उछाल देता हूँ

उन सबकी ओर

जिनके हाथ बहुत लंबे हैं

जो कभी भी किसी के भी गिरेबान तक पहुँचने की ताकत रखते हैं
जो बार - बार
वादा करते हैं
कि वे इक रोज हमारी दुनिया बदल देंगे
मैं ये कविता उनकी ओर धीरे से बढ़ाकर यह कहना चाहता हूँ
ये खबरें मेरी दुनिया को बर्बाद कर रहीं हैं
दुनिया बदलने की शुरुआत इस खबर से करें।

4

इसमें मेरा कोई दोष नहीं
कि मैं अपनी उम्र से कहीं अधिक बुजुर्ग लगता हूँ।
मैंने हर एक दिन को
पूरे साल की तरह काटा है।
मेरे पास बीते समय का कोई हिसाब नहीं है।
कि कितनी रातें मैं भूख को बहलाता
और
नींद को बुलाता रहा।

घड़ी की सुइयाँ
न तो मनुष्य की तरह लापरवाह होती हैं
और न देवताओं की तरह गैर - जिम्मेदार
लेकिन फिर भी मेरे पास समय का कोई हिसाब नहीं है।
मेरे पास कोई हिसाब नहीं
कि मेरे द्वारा कितनी नौकरियों के आवेदन - पत्र भरे गए

उनमें से कितनों की परीक्षाएँ हुईं कितनों की नहीं।

अब जब लोग कहते हैं
कि अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है?
तो मैं ठिठक कर यह सोचता हूँ
कि क्या
लोग भूल गए हैं
कि सत्ताईस साल कितने होते हैं?
खैर मैं भूल जाऊँ
लोग भूल जाएँ
घड़ी नहीं भूलती
घड़ी तो घड़ी है।
घड़ी
मनुष्य नहीं
देवता नहीं...

5

जब कोई भाषा नहीं थी
मेरे पास,
तो भी मेरे पास
दो आँखें थीं
उनमें चमक थी,
आँसू थे।
मेरे होंठ थे और उनपर हरश्रृंगार के फूल सी

बिछी रहती थी हँसी।

एक चेहरा था

जो छोटी छोटी बातों पर

खिल जाया करता था

कभी मुरझा जाया करता था किसी पौधे की तरह

उदास होकर

दुनिया केवल भाषा और शब्दों के जाल से नहीं चलने वाली.....

उसके लिए तुम्हें चेहरे को पढ़ना

आना चाहिए..

जैसे मेरी माँ मुझे देखकर जान जाती है

कि मैं कितना भूखा हूँ।

पुरणलाल

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय भावनगर परा

अहमदाबाद संभाग

1

पिता अगर फूल होते, तो होते गेंदा।
गेंदा कभी गुलदस्ते में नहीं रखा जाता
वह धागों में पिरोकर बाँध दिया जाता हैं
किसी के गले में, किसी की तस्वीर पर
"या किसी देहलीज के आर-पार।

"पिता भी बाँधे जाते हैं, अपेक्षाओं में,
'जिम्मेदारियों में, और बीतता है उनका जीवन
देहलीज़ के आर-पार।
होती हैं सजावट गुलाबों और गुलबहारों से
गेंदा बस काम आता हैं।
वो काम आता है एक समान, उत्सव और शोक में।
"जैसे पिता हर आने जाने वाले से पूछ लेते हैं चाय-पानी
शादियों और जनाजों में।

मंदिर की सीढ़ियों पर माँ ने हमेशा गेंदा ही चढ़ाया।
ठीक नहीं लगा खूबसूरत गुलाबों का तोड़ना

गेंदा ही जा सकता था, हमारी प्रार्थनाओं के लिए
पौधें से दूर

गेंदे नहीं माँगते, बढ़ने को छाँव और प्रेम का स्पर्श
वो बस बढ़ जाते हैं कर्तव्यनिष्ठ होकर
कि कल को बँधना होगा धागों में, चढ़ना होगा मंदिरों में
और बनना होगा काम आ जाने वाला वह हार
जो काम के बाद सहेजा नहीं जाता
जैसे पिता
गेंदे कभी सूरज से नहीं दिखते
पर सूरज बन जाते हैं
धीरे-धीरे काम
आते हुए
चुपचाप
जैसे पिता!

गंगा विशन

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 01, जोधपुर
जयपुर संभाग

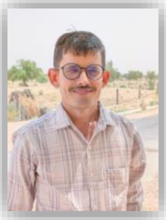

1

माँ केवल एक शब्द नहीं,
जीवन का मधुर संगीत है।
धरती पर ईश्वर का अनुपम,
सबसे पावन प्रीत है।

जब-जब दुनिया ने ठुकराया,
माँ ने बाहें खोल दीं।
मेरे हर आँसू की कीमत पर,
अपनी सारी खुशियाँ तोल दीं।

खुद काँटों पर चलती रही,
मेरे लिए फूल बिछाती रही।
रात-रात भर जागकर भी,
हँसकर लोरी गाती रही।

मेरी हर छोटी मुस्कान में,
माँ का पूरा संसार बसा।
मेरी हर एक सफलता में,
उसका अनगिनत त्याग हँसा।

न कोई मंदिर, न कोई तीर्थ,
माँ के चरणों से बढ़कर है।
जिस घर में माँ का वास रहे,
वह घर सचमुच ईश्वर का घर है।

यदि फिर से जीवन मिल जाए,
बस इतनी-सी मेरी चाह-
हर जन्म में तेरी गोद मिले,
तेरा आँचल, तेरा ही साथ।

माँ, तू प्रेम की गंगा है,
तू ही जीवन का सम्मान।
तेरे चरणों में स्वर्ग बसे,
तुझको मेरा शत-शत प्रणाम।

2

जीट में आया सीखने का उजियारा,
हर दिन मिला ज्ञान का नया सितारा।
कक्षा में चर्चा, विचारों की बात,
सीखने-सिखाने की अनोखी सौगात।

मुंबई की बारिश जब झूमकर आई,
बादलों ने अपनी महफ़िल सजाई।
छतरी छोटी, राहें थीं लंबी,
फिर भी मुस्कानों की कमी न थी कोई।

प्रशिक्षण ने सिखाया-कुछ नया करें,
हर चुनौती से मिलकर आगे बढ़ें।
बारिश ने कहा-रुकना नहीं है,
बूँदों के संग भी मुस्कुराना है।

जीट की यादें रहेंगी सुहानी,
बारिश की बूँदों में लिखी कहानी।
ज्ञान मिला, अनुभव मिला, साथ मिला,
मुंबई में सीखने का खास एहसास मिला।

जीट की सीख और मुंबई की फुहार,
बना गई जीवन का सुंदर उपहार।

चेतन लाल आदित्य

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बिलासपुर

रायपुर संभाग

1

हिन्दी भारत माता की बिंदी (बिंदी अर्थात सुहाग)
बिंदी स्त्री के सुहाग की निशानी है।
इसके बिना उसकी दुनिया ही विरानी है।
बिना बिंदी स्त्री की सुंदरता ही खत्म हो जाती है।
इसीलिए तो वह बिना बिंदी विधवा कहलाती है।
हिन्दी भी तो भारत माता की सुहाग है।
हम उसके रक्षक हैं यह हमारा सौभाग्य है।

लेकिन हिन्द में हिन्दी वाले ही, हिन्दी की शाख को धूमिल कर रहे हैं,
अपनी जिंदगी में पाश्चात्य सभ्यता को, पुरजोर शामिल कर रहे हैं।
आज विदेशों में भी हिन्दी की प्रचार हो रही है,
लेकिन अपने ही घर में हिन्दी क्यों रो रही है।
भारत माता की सुहाग की निशानी का बचाओ
मेरे प्यारे भारत में पाश्चात्य संस्कृति को मत फैलाओ।
हमारी भारत माता आज अपने संस्कारों से ही विश्व में पूजी जाती है,
कभी यह सोने की चिड़िया थी , आज संस्कारी बिटिया कहलाती है।

लेकिन आज देश में पाश्चात्य का चक्रवात जिस कदर मंडरा रहा है,
उसे देखकर तो मुझे हिन्दी, पर खतरा नजर आ रहा है।
मुझे तो दाल में कुछ काली नजर आ रही है,
तभी तो हिन्दी जैसे विशाल वृक्ष को, एक विदेशी दीमक खा रही है।
अरे हिन्दी से ही तो हमारी पहचान है,
यही तो हमारी आन , बान और शान है

तब फिर क्यों मेरी माता द्रोपदी सी असहाय नजर आ रही है,
और अपनी लाज की रक्षा के लिए किसी कृष्ण को नहीं,
हमें और तुम्हें बुला रही है।
अरे इस देश का हर नागरिक मेरा ही तो अंश है
तब फिर यह धर्म, भाषा और संप्रदाय का लगा क्यों कलंक है।

भेदभाव को मिटाइए ,देश में समरूपता लाइए।
क्योंकि हिन्दी किसी संप्रदाय की नहीं , हर धर्म की भाषा है ,
सब मिलकर करोगे इसकी रक्षा, यही आपसे मेरी आशा है।
मेरे प्यारे साथियों
हिन्द और हिन्दी को बचाइए,
मेरी प्यारी भारत माता को, विधवा मत बनाइए।
मेरी भारत माता को, विधवा मत बनाइए।।
जय हिन्द, जय हिन्दी

रंजीत कुमार जयसवाल

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बेली रोड़ पटना

पटना संभाग

1

शिक्षा ही वह महान साधन है,
जो जीवन के अंधकार को हरती है।
ज्ञान का प्रकाश जीवन में भरकर,
क्षेत्र-विशेष में कुशलता प्रदान करती है।

शिक्षा ही वह महान साधन है,
जो परिवार, समाज, देश व
विश्व के अन्य देशों से परिचय कराकर,
विश्व-बंधुत्व की भावना जगाती है।

शिक्षा ही वह महान साधन है,
जो लिंग भेद, भाषा भेद, जाति भेद को
समूल नष्ट कर समरसता एवं भाईचारा का,
सफल व सार्थक रास्ता दिखाती है।

शिक्षा ही वह महान साधन है,
जो पीड़ा में भी खुश रहना सिखाती है।
आपदा को अवसर बताकर,
अशुभ को शुभ बनाना सिखाती है।

लीला शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एकलिंगगढ़ उदयपुर
जयपुर संभाग

1

काली घटा जब नभ में छाए,
रिमझिम-रिमझिम बूँदें लाए।
काली घटा जब नभ में छाए,
बूँदें टप-टप गीत सुनाए।
मिट्टी की खुशबू मन को भाए,
पेड़-पौधे भी झूम-झूम जाए।
सूखी धरती हरी हो जाए।
सावन मन को बहुत लुभाए,
ख्वाहिशों से भर जाए हर मन,
खेतों में हरियाली छा जाए।
मेंढक टर्र-टर्र गीत सुनाए,
बच्चे कागज की नाव चलाए।
बच्चे हँसे, खेले, गाए,
मोर नाचे पंख फैलाए।
पेड़ों पर झूले पड़ जाए,
जीवन में खुशी भर जाए।
काली घटा जब नभ में छाए।

2

मेरी माँ मेरी प्रेरणा,
मेरी खुशियों की है वजह।
माँ मेरी ममता की मूरत,
माँ मेरी पहली गुरु है।
माँ मेरी सच्ची पहचान,
उनकी मीठी-मीठी बातें,
भर देती मन में मुस्कान।
मेरी हर छोटी-सी कोशिश में,
वह विश्वास जगाती हैं।
जब मैं हार मानने लगती हूँ,
तो वह हिम्मत बन जाती हैं।
उनसे सीखा सदा मुस्कुराना,
हमेशा सीखा आगे बढ़ते जाना।
सच्चाई की राह पकड़कर,
हर मुश्किल से लड़ते जाना,
और कभी न पीछे हटना।
अब मैं कहूँ, मेरा जीवन महान,
उनके चरणों में ही बसता,
मेरे जीवन का सारा मान।

सरला उइके
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बीएमवाय, भिलाई
रायपुर संभाग

1

है अभी भी याद जो मेरे जेहन में
कहा था एक बार
एक समझदार व्यक्ति ने -
जब आप समझ जाते हैं
अपनी सोच की ताक़त,
आप कुछ भी नहीं सोचते।
जब आप समझ जाते हैं
अपनी मौजूदगी की ताक़त
आप कहीं भी नहीं होते।
अपनी क़ीमत पहचानें।
जाने अपनी ताक़त को।
मुसीबतों में
यही आपका बनती है-
सबसे बड़ा हथियार
सुन मेरे यार।

सुमित्रा कुम्हार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 सेना जोधपुर
जयपुर संभाग

1

बच्चों सा मन हो जाए फिर,
तो दुनिया कितनी प्यारी हो,
मुट्ठी भर खुशियों में जैसे
पूरी दुनिया हमारी हो।

रूठें तो पल में मान जाएँ,
हँसें तो खुलकर हँस पाएँ,
जिससे मिलें उसी में जैसे
अपना कोई ढूँढ लाएँ।

चाँद को छूने की ज़िद हो,
तारों से भी बातें हों,
कागज़ की नाव में बैठाकर
सपनों की बरसातें हों।

न कोई कल की जल्दी हो,
न बीते कल का हिसाब रहे,
बस आज की छोटी खुशियों में
मन अपना बेहिसाब रहे।

बड़े हुए तो सीख गए हम
हर चीज़ को तौलना-परखना,
काश! फिर से सीखें थोड़ा
बिना वजह खुश होना, हँसना।

साक्षी शिंगटे

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-5, मुंबई
मुंबई संभाग

1

राजभाषा हिन्दी है
भारत की आन, बान और शान
समूचे राष्ट्र को एकसूत्र में
बाँधने का है इसका अभियान।

यूँ तो शुरू से रही है यह
भारत की बोली,
लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात इसे
सही पहचान है मिली।

संविधान के अनुच्छेद 343 में
विराजमान है यह
राजनैतिक और प्रशासनिक कार्यों की
जान है यह।

उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक,
सभी भारतीय कर सके इसका पाठ
इसलिए क ख ग वर्गों में
दिया है इसे बाँट।

सितंबर माह में लग जाती है
इसके समारोह की होड़ ,
पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित सभी प्रतियोगिताएँ
देती हैं लोगों के दिलों से जोड़।

इसके प्रचार व प्रसार की ज़िम्मेदारी,
अब है हमारे हाथ
विश्व में इसका परचम लहराना
है हम सबके लिए बड़े गर्व की बात।

लवकुश शर्मा

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, गणेशखिंड, पुणे
मुंबई संभाग

1

मन मेरा-हाँ, मेरा मन,
गढ़ता विकसित भारत का सृजन।
मन मेरा-हाँ, मेरा मन...

यह के वि का पावन संगठन,
जहाँ सजता अनुपम भारत-गठन।
संस्कारों की बहती धार,
सपनों को मिलते नए पंख-अपार।
मन मेरा-हाँ, मेरा मन...

मैं बुनता विकसित भारत का स्वप्न,
जहाँ सजता मिनी-भारत का गगन।
विविधता में एकता का मान,
के.वि. ही है देश की शान!
मन मेरा-हाँ, मेरा मन...

डॉ राजेश शर्मा

पुस्तकालयाध्यक्ष

(कार्यशाला समन्वयक)

जीट मुंबई

1

जब कल्पना लेने लगती है मन में आकार,
भर जाती है बंजर दुनिया भी रंगों से।

विचार अंकुरित होते हैं बीज बनकर,
लहलहा उठते हैं सपनों के नव-वृक्ष।

उभरते हैं चित्र मन के आकाश में,
साकार होने लगती हैं अनदेखी कल्पनाएँ।

हर एक विचार में छिपा होता है एक सृजन,
जो जीवन को देता है नई पहचान।

कल्पना कहाँ सपनों की कहानी है,
उन्हें साकार करने की सच्ची रवानी है।

जो सोचता है सबसे अलग,
वही रचता है कुछ नया,
और इस संसार को
अधिक सुंदर, अधिक श्रेष्ठ बनाता है।

वही कल्पना और यथार्थ के बीच
सफलता का सेतु बनाता है,
जो संघर्षों की राह में
कभी हार नहीं मानता।

असंभव को संभव कर दिखाने की शक्ति,
कल्पना के भीतर ही सृजन की साधना बनकर रहती है।

तो आओ,
मुक्त आकाश की उड़ान दें
अपने विचारों को
और उन्हें मधुर शब्दों,
सुंदर कर्मों और नव-सृजन का रूप दें।

कितनी अद्भुत, कितनी प्रेरणादायी है!
विचार से यथार्थ तक की यह यात्रा

यही है प्रगति,
यही है सृजन,
और यही है
मनुष्य की सच्ची पहचान।

दिनेश सिंह

(कार्यशाला संसाधक)

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

केंद्रीय विद्यालय वि वि नगर

अहमदाबाद संभाग

1

मन मेरा-हाँ, मेरा मन,
गढ़ता विकसित भारत का सृजन।
मन मेरा-हाँ, मेरा मन
भूमिपुत्र, भूस्वामी अन्नदाता की शाब्दिक शोभा पाता,
लहलहाती फसलों अर मूलकती माटी बिच,
मेरा भी खेत खलियान होता।
काश ! मैं भी...
हरे भरे खेतों संग,
घास फूस की कुटिया होती।
कुटिया के आँगन में,
गाय बछिया सोती,
दादी नानी के चुगे हित,
चिड़ी कमेड़ी आती,
मधुर मीठी तान सुनाती।
काश! मैं भी...
धरती माँ की सेज शैया पर,
नील फ़लक का चादर ओढ़े।
बसंती बयार का झूला झूलाकर,
खग कलरव का साज सजाकर,
जन्नत सी मौज मनाता।

काश! मै भी…
सुबह सवेरे मुंह अंधेरे,
उठकर खेतों को जाता।
झाड़ झंझाड़ केरबाँट,
काटकर सूड सजाता,
धरती को स्वर्ग बनाता।
काश! मैं भी...
चिलचिलाती धूप अर,
जेठ की भरी दोपहरी में,
पसीने की बूँदों से मोती उगाता।
काली घटा देख अंबर में,
झूम उठता,
सावन की पहली फुहार में भीगकर,
मेघों को देख मयूर संग सुर मिलाता,
काश! मैं भी...
कंधे पर हल रख,
बैलों की जोड़ी संग,
भोर के तारों की छांव में निकल जाता।
रूखी-सूखी रोटी,
प्याज और चटनी का,
खेजड़ली की छांव तले
छप्पन भोग लगाता,
आत्मसंतोष का सुस्वाद पाता।
काश! मैं भी...
किटकीटाती रातों में
प्रेमचंद का हरखू बनकर,
नीलगाय को दूर भगाता
पनघट और पगडंडी पर दिनरात पहरा लगाता।

काश! मैं भी...
अलाव की आंच में अपने को समेटकर, मारू-मल्हार और कजरी के गीत गाता।
सच्ची और बेफिक्र नींद सो जाता,
काश! मैं भी...
सोने सी चमकती गेहूं की बालियों को,
बाँहों में भर घर की देहरी पर लाता।
कर्ज और मर्ज से कोसों दूर रहकर,
मेहनत की कमाई से त्योहार मनाता।
काश! मैं भी...
सुकर्म अर सुश्रम से
स्वावलंबन का पाठ पढ़ाता,
छल-कपट की दुनिया से दूर,
इक सच्चा इंसान होता,
काश! मैं भी किसान होता।

महेश कुमार कुलदीप

(कार्यशाला संसाधक)

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

केंद्रीय विद्यालय जयसिंधर, बाड़मेर

जयपुर संभाग

1

अगरचे हो गई है हार मेरी
सलामत है मगर दस्तार मेरी

कभी खुलकर बताती ही नहीं कुछ
"उदासी है बहुत हुशियार मेरी"

उसूलों से जुदा होने लगा था
ज़रूरी हो गई थी हार मेरी

कलम छूटा तो यूँ लगने लगा है
किसी ने छीन ली तलवार मेरी

ये कैसे मोड़ पर मैं आ गया हूँ
मुझे ही काटती है धार मेरी

वो मुझसे जीतकर भी ख़ुश नहीं है
यही है जीत बर-ख़ुर्दार मेरी

मुझे सच की तरफ़ ही पाओगे तुम
अगर तुमसे हुई तकरार मेरी

अकेला पड़ गया 'कुलदीप'आख़िर
मुसीबत बन गई रफ़्तार मेरी

2

सौलह आना सच्चाई थी बाबू जी की बातों में
सागर जैसी गहराई थी बाबू जी की बातों में

अपने दुख को दुख कब समझा कब की उस पर कोई बात
पर शामिल पीर पराई थी बाबू की बातों में

मन उमंग से भर जाता था जब वे बातें करते थे
सुबह की ताज़ी पुरवाई थी बाबू जी की बातों में

रिश्ते-नाते प्यार अदब अब दौलत देख के होते हैं
इसको लेकर रुसवाई थी बाबू जी की बातों में

दुनियादारी मतलबपरस्ती बढ़ती दूरी घटता प्यार
दिन-दिन बढ़ती महँगाई थी बाबू जी की बातों में

सबको मिल जुल कर रहने की सीख दिया करते थे वो
नव जीवन की रानाई थी बाबू जी की बातों में

दुनिया को वे सबसे गंदी शै बतलाते थे ‘कुलदीप’
अक्सर दिखती रुसवाई थी बाबू जी की बातों में

छवि